खोरठा पटतइर (लोकोक्ति)

→ खोरठा में लोकोक्ति को पटतइर, कहबी, लोकवाक्य, कामइत, कहावत भी कहा जाता है।

→ ये पूर्ण वाक्य होते हैं।

→ लोकोक्ति का सीधा-सीधा अर्थ होता है—
लोक की उक्ति या लोक के मुँह से निकली शिक्षा भरी बात।

→ कहावत में लौकिक अनुभव रहे हैं।
जैसे- हरदिक रंग परदेसीक संग

लोकोक्ति के संदर्भ में डॉ० ~~एस० एस०~~ वासुदेव शरण ~~दक्षिणमूर्ति~~ का कहना है कि—

"लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान और अनुमान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं।"

एस० एस० दक्षिणमूर्ति—

"कहावत सामान्यतः संक्षिप्त और प्रभावशाली होती हैं जिसमें जीवन की अनुभूतियाँ स्पष्ट झलकती हैं।"

लोकोक्ति और कहावत में अंतर

ये बात सच है कि कहावत और लोकोक्ति दोनों का आकार छोटा होता है। लेकिन दोनों प्रभावशाली लोककथन हैं। जो किसी भाषा में जान डाल देते हैं। और साथ ही भाषा को सुंदर बनाते हैं। लेकिन दोनों के मध्य थोड़ा-बहुत अंतर भी है। आइए क्रमवार अंतर को देखें —

कहावत / लोकोक्ति	मुहावरा
(1) कहावत का स्वतंत्र और एकल पहचान तथा अस्तित्व मिलता है।	(1) मुहावरा का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहता। बिना वाक्य के इसका प्रयोग नहीं मिलता है।
(2) कहावत में जीवन का अनुभव छुपा रहता है।	(2) मुहावरा में ~~प्रयोग~~ प्रयोग किए शब्दों के अर्थ मूल शब्द से भिन्न होते हैं।
(3) कहावत का दूसरी भाषा में अनुवाद करने पर इसके अर्थ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।	(3) प्रत्येक भाषा का अपना मुहावरा होता है दूसरी भाषा में अनुवाद करने पर मामला बिगड़ जाता है।

लोकोक्ति		हिन्दी अर्थ
(1) आम के आम, गुठली के दाम	—	लाभ ही लाभ
(2) अजवाइर सुखे गधाक मेलान	—	फालतू काम
(3) आगे नाथ ना पीछे पाघा	—	अकेला
(4) आँइखेक आँधा नाम नयनसुख	—	अनुपयुक्त नाम
(5) अघाइल बौकली पौंठी तिता	—	पेठ भरा रहने पर स्वादिष्ट भोजन भी बेकार लगता है)
(6) अरंडी कौने बिलाइर बाघ	—	कपरा जगह में कमजोर की भी खूब पूछ होती है।
(7) अनकर आँटा, अक्कर घी भंडारीक बापेक जाइ की ?	—	दूसरे की संपत्ति पर कोई परवाह नहीं करता।

8) अजवाइर बनियाँ घुइर-घुइर तोले — खाली समय का दुरुपयोग

9) अलगल औ पर बोलथ बलगर — कमजोर पर सभी ताकत दिखाते हैं।

10) अनकर खेती अनकर गाय, वे धुरावे से लाइत खाय। — दूसरे के झगड़े में दखल देने से फँसने का खतरा है।

11) अंधरा सुतल चाहे जागल — जिसने प्रकाश देखा नहीं है, उसे सोने जागने का फर्क कैसे मालूम होगा।

12) अति भगति चोरक लच्छन — दिखावटी सेवा ठगने की निशानी है।

13) अनारी जोते कनारी, सियान जोते बारिआर — खेती का अनुभवी सही जोत करता है, जो नहीं जानता उसका परिश्रम व्यर्थ जाता है।

(14) अधजल गगरी छलकत जाय, भरल घइला चुप जाय
↳ कम औकात के लोग अधिक इतराते हैं जबकि ज्ञानी चुप रहते हैं।

(15) अस्सी चुटकी नब्बे ताल, तब देखब खेती के हाल —
खेती को जितना रगड़ो उतना मजा।

(16) अँगरी: गनाइ ओला — कम संख्या का प्रतीक

(17) अँधरी बिलाइक घरवें सिकार — असमर्थ व्यक्ति घर में ही लोभ का अखाड़ा खोलता है।

(18) अँधरन माँझें काना राजा — मूर्खों के बीच कम पढ़ा-लिखा भी विद्वान होता है।

(19) अधन सुखे फूलल गाल फइर बहोरिया ओहे हाल
↳ धन होने पर अहंकार करना, फिर पुराना हाल होना।

(20) अगरी खरनाइ गगरी पानी → जब प्राकृतिक बारिश नहीं हो तो अन्य से पूर्ति संभव नहीं।

(21) अँधरा खोजे चाइरगो आँइख → जिसके पास जो चीज नहीं है, उसकी चाहत चौगुनी हो जाती है।

(22) अनकर धने विक्रम राजा → दूसरे की संपत्ति दिखलाकर कोई धनवान नहीं बन सकता।